IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analytical study of economic structure in Kautilya's Arthashastra

डॉ. ओम प्रकाश सुखवाल
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग
आर.एन.टी. पी.जी. कॉलेज, कपासन, जिला–चितौडगढ (राज.)

सारांश (Abstract)

कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र प्राचीन भारतीय ज्ञान–परंपरा का एक ऐसा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें राज्य, समाज और अर्थव्यवस्था का समन्वित एवं वैज्ञानिक विवेचन मिलता है। यह ग्रंथ केवल राजनीतिक या प्रशासनिक नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आर्थिक संरचना, उत्पादन व्यवस्था, कर प्रणाली, व्यापार, श्रम नीति तथा राज्य के आर्थिक नियंत्रण का विस्तृत और व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की स्थिरता एवं शक्ति का मूल आधार उसकी आर्थिक समृद्धि है और प्रजा का कल्याण ही राज्य की वास्तविक सफलता का मानदंड है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य अर्थशास्त्र में निहित आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना तथा यह स्पष्ट करना है कि कौटिल्य की आर्थिक नीतियाँ किस प्रकार राज्य–नियंत्रित किंतु जन–कल्याणोन्मुख अर्थव्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत करती हैं। इस अध्ययन में कौटिल्य की कृषि नीति, उद्योग एवं शिल्प व्यवस्था, कर प्रणाली, व्यापारिक नियंत्रण तथा श्रम नीति का गहन विश्लेषण किया गया है और उनकी आधुनिक आर्थिक अवधारणाओं, जैसे कल्याणकारी राज्य, मिश्रित अर्थव्यवस्था एवं प्रगतिशील कर प्रणाली,से तुलनात्मक विवेचना की गई है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कौटिल्य की आर्थिक संरचना न केवल अपने युग के लिए प्रासंगिक थी, बल्कि आधुनिक आर्थिक संदर्भों में भी उसकी उपयोगिता बनी हुई है।

कूट शब्द (Keywords)

कौटिल्य, अर्थशास्त्र, आर्थिक संरचना, राज्य नियंत्रण, कर प्रणाली, कल्याणकारी राज्य

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय राजनीतिक एवं आर्थिक चिंतन की परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और वैज्ञानिक रही है। इस परंपरा में कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है, जो राज्य की संपूर्ण संरचना–राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का व्यवस्थित एवं व्यावहारिक विवेचन प्रस्तुत करता है। यद्यपि अर्थशास्त्र को प्रायः राजनीति और कूटनीति का ग्रंथ माना जाता है, तथापि इसके भीतर निहित आर्थिक विचार अत्यंत व्यापक, गहन और आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त हैं।

कौटिल्य के अनुसार राज्य की शक्ति का मूल स्रोत उसकी आर्थिक स्थिति होती है। वे स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि बिना सुदृढ़ आर्थिक आधार के न तो प्रशासन प्रभावी हो सकता है और न ही राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। इसी कारण उन्होंने कृषि, उद्योग, व्यापार, कर व्यवस्था, श्रम नीति और बाजार नियंत्रण जैसे विषयों पर विस्तार से विचार किया है। उनका यह कथन **"कोशमूलो हि दण्डः"** राज्य और अर्थव्यवस्था के अभिन्न संबंध को स्पष्ट करता है।

मौर्यकालीन भारत की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में रचित अर्थशास्त्र तत्कालीन राज्य की आवश्यकताओं का यथार्थवादी उत्तर प्रस्तुत करता है। कौटिल्य का आर्थिक दर्शन न तो पूर्णतः मुक्त बाजार का समर्थन करता है और न ही पूर्ण राज्य–नियंत्रण का; बल्कि यह एक ऐसी आर्थिक संरचना का प्रतिपादन करता है जिसमें राज्य नियामक और संरक्षक की भूमिका निभाता है तथा जन–कल्याण को सर्वोच्च लक्ष्य मानता है।

आधुनिक युग में, जब आर्थिक असमानता, राज्य की भूमिका, बाजार नियंत्रण तथा कल्याणकारी नीतियों पर व्यापक विमर्श हो रहा है, तब कौटिल्य की आर्थिक अवधारणाएँ पुनः विचारणीय हो जाती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी संदर्भ में अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है और यह दर्शाने का प्रयास करता है कि कौटिल्य का आर्थिक चिंतन अपने समय से कहीं आगे था।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर विद्वानों द्वारा विविध दृष्टिकोणों से अध्ययन किया गया है। अधिकांश शोध कार्यों में इसे राजनीतिक दर्शन, शासन व्यवस्था तथा कूटनीति के ग्रंथ के रूप में विवेचित किया गया है, जबकि आर्थिक पक्ष केंद्र में अपेक्षाकृत कम रहा है।

राधाकुमुद मुखर्जी ने कौटिल्य को प्राचीन भारत का यथार्थवादी राजनीतिक चिंतक मानते हुए उनके आर्थिक विचारों को राज्य की शक्ति से जोड़कर देखा है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र में वर्णित कर प्रणाली और उत्पादन व्यवस्था मौर्यकालीन राज्य की आर्थिक सुदृढ़ता को दर्शाती है। रोमिला थापर ने मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अर्थशास्त्र को ऐतिहासिक स्रोत के रूप में स्वीकार किया है, किंतु उनका विश्लेषण मुख्यतः सामाजिक–ऐतिहासिक ढाँचे तक सीमित है।

वी. आर. आर. दीक्षितर तथा अन्य विद्वानों ने कौटिल्य की प्रशासनिक दक्षता और राज्य नियंत्रण पर प्रकाश डाला है, परंतु आर्थिक संरचना को स्वतंत्र एवं समग्र अध्ययन का विषय नहीं बनाया गया। कुछ आधुनिक अध्ययनों में कौटिल्य की कर नीति और बाजार नियंत्रण की चर्चा अवश्य की गई है, किंतु उन्हें आधुनिक आर्थिक सिद्धांतों से जोड़ने का प्रयास सीमित रहा है।

इस प्रकार उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निहित आर्थिक संरचना का समग्र, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी साहित्यिक रिक्तता को भरने का प्रयास करता है।

शोध–विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध–पत्र में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निहित आर्थिक संरचना का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक शोध–विधियों का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन पूर्णतः सैद्धांतिक एवं ग्रंथाधारित है।

शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में कौटिल्य का अर्थशास्त्र (संस्कृत मूल तथा हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद) लिया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, अर्थशास्त्र एवं राजनीति से संबंधित विद्वानों की पुस्तकों, शोध–पत्रों तथा समीक्षात्मक लेखों का उपयोग किया गया है।

वर्णनात्मक विधि के माध्यम से कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित आर्थिक संस्थाओं एवं नीतियों का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक विधि द्वारा उनकी उपयोगिता, व्यावहारिकता एवं अंतर्निहित सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। तुलनात्मक विधि के अंतर्गत कौटिल्य की आर्थिक अवधारणाओं की आधुनिक आर्थिक सिद्धांतों,जैसे कल्याणकारी राज्य एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था, से तुलना की गई है। ऐतिहासिक विधि के माध्यम से मौर्यकालीन सामाजिक–आर्थिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन को संतुलित रूप प्रदान किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक संरचना का समग्र अध्ययन करना।
2. प्राचीन भारतीय राज्य की आय के स्रोतों तथा राजकोषीय व्यवस्था का विश्लेषण करना।
3. कृषि, उद्योग, व्यापार एवं श्रम नीति में राज्य की भूमिका को स्पष्ट करना।
4. कौटिल्य की कर प्रणाली की प्रकृति एवं न्यायसंगत स्वरूप का मूल्यांकन करना।
5. कौटिल्य की आर्थिक नीतियों के कल्याणकारी पक्ष को रेखांकित करना।
6. कौटिल्य के आर्थिक विचारों की आधुनिक आर्थिक अवधारणाओं से तुलनात्मक समीक्षा करना।
7. समकालीन आर्थिक संदर्भों में कौटिल्य की आर्थिक संरचना की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध–अंतराल (Research Gap)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध कार्य राजनीतिक दर्शन, शासन प्रणाली एवं कूटनीति पर केंद्रित रहे हैं। आर्थिक पक्ष को प्रायः सहायक विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि कर प्रणाली, राज्य नियंत्रण एवं प्रशासनिक ढाँचे पर कुछ अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी कौटिल्य की आर्थिक संरचना का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत अल्प है।

विशेषतः कृषि, उद्योग, व्यापार, श्रम नीति तथा राजकोष को एकीकृत आर्थिक प्रणाली के रूप में देखने का अभाव दृष्टिगोचर होता है। इसके अतिरिक्त, कौटिल्य की आर्थिक अवधारणाओं की आधुनिक आर्थिक सिद्धांतों से तुलनात्मक समीक्षा भी सीमित रही है। इन्हीं शोध–अंतरालों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निहित आर्थिक संरचना का समग्र, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

परिकल्पना (Hypothesis)

प्रस्तुत शोध–पत्र निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक आर्थिक ग्रंथ है।
2. कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित आर्थिक संरचना राज्य–नियंत्रित किंतु जन–कल्याणोन्मुख है।
3. कौटिल्य की कर प्रणाली न्यायसंगत, व्यावहारिक एवं प्रगतिशील स्वरूप की थी।
4. कौटिल्य की आर्थिक नीतियाँ अपने युग के अनुरूप होने के साथ–साथ आधुनिक अर्थव्यवस्था में भी प्रासंगिक हैं।
5. राज्य की आर्थिक समृद्धि को प्रजा के कल्याण से जोड़ना कौटिल्य के आर्थिक दर्शन की मूल अवधारणा है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में आर्थिक संरचना का विश्लेषण (Analysis of Economic Structure in Kautilya's Arthashastra)

कृषि आधारित आर्थिक व्यवस्था (Agriculture Based Economic System)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कृषि को राज्य की आर्थिक संरचना की आधारशिला माना गया है। उनके अनुसार राज्य की स्थिरता एवं समृद्धि प्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है। कौटिल्य ने कृषि को केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि राज्य की आय का प्रमुख स्रोत स्वीकार किया है।

कौटिल्य भूमि को राज्य की संपत्ति मानते हैं तथा उसकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई व्यवस्था, भूमि सुधार एवं कृषकों को प्रोत्साहन देने पर विशेष बल देते हैं। राज्य द्वारा स्वयं की जाने वाली कृषि को 'सीता भूमि' कहा गया है, जिससे राजकोष में प्रत्यक्ष आय होती थी। इसके अतिरिक्त किसानों को बीज, उपकरण एवं संकट के समय सहायता प्रदान करना राज्य का कर्तव्य माना गया है।

यह कृषि नीति आधुनिक विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अपनाई जाने वाली राज्य–समर्थित कृषि व्यवस्था की अवधारणा से मेल खाती है।

उद्योग एवं शिल्प व्यवस्था (Industry and cCaft System)

कौटिल्य ने उद्योग एवं शिल्प को आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण साधन माना है। अर्थशास्त्र में वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग, हथियार निर्माण, खनन, नमक एवं मद्य उत्पादन जैसे उद्योगों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। इनमें से अनेक उद्योग राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे, जिससे राजस्व की निरंतरता सुनिश्चित होती थी।

कौटिल्य का मानना था कि रणनीतिक महत्त्व वाले उद्योगों पर राज्य का नियंत्रण आवश्यक है, जबकि अन्य उद्योगों को राज्य संरक्षण के साथ निजी स्तर पर भी संचालित किया जा सकता है। यह व्यवस्था आधुनिक मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) का प्रारंभिक रूप प्रतीत होती है।

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)

कौटिल्य के आर्थिक विचारों में व्यापार एवं वाणिज्य का विशेष स्थान है। उन्होंने आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार को राज्य की समृद्धि का साधन माना है। राज्य व्यापार को प्रोत्साहित करता था, परंतु उस पर कठोर नियंत्रण भी रखता था।

व्यापारियों द्वारा अधिक मुनाफाखोरी, जमाखोरी एवं मूल्य वृद्धि को रोकने के लिए राज्य द्वारा मूल्य नियंत्रण नीति अपनाई जाती थी। पण्याध्यक्ष (the highest authority of trade and commerce) जैसे अधिकारियों की नियुक्ति कर बाजार की निगरानी की जाती थी। विदेशी व्यापार से प्राप्त राजस्व को भी राज्य की आय का महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है।

मौद्रिक एवं मापन व्यवस्था (Monetary and Measurement System)

कौटिल्य के आर्थिक विचारों में व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति हेतु उचित मौद्रिक एवं मापन व्यवस्था भी की थी। कौटिल्य ने मुद्रा का अर्थ बताते हुए कहा कि मुद्रा वह है जो देष में विनिमय का माध्यम एवं विधिग्राह हो। कौटिल्य के अर्थषास्त्र में ''पण'' का उल्लेख है जो उस समय की प्रमाणिक मुद्रा थी। पण के अतिरिक्त छोटे लेने देन हेतु अर्ध पण, पाद पण, अष्टभाग पण आदि का वर्णन है। इसके अतिरिक्त माषक, अर्द्धमाषक मुद्रा का भी वर्णन है। कौटिल्य के अनुसार मुद्रा सरल, सुविधाजनक, मितव्ययी व लोचदार होनी चाहिए। मुद्रा निर्माण पर सरकारी हस्तक्षेप का उल्लेख है, जो वर्तमान व्यवस्था का अभिन्न अंग है।

कर प्रणाली (Tax System)

कौटिल्य की कर प्रणाली वैज्ञानिक, व्यावहारिक एवं न्यायसंगत थी। उन्होंने करों को राज्य की आय का प्रमुख साधन माना, किंतु अत्यधिक कराधान का विरोध किया। कर निर्धारण की प्रक्रिया प्रजा की आय और क्षमता के अनुसार की जाती थी।

भूमि कर, व्यापार कर, उत्पादन कर एवं सीमा शुल्क प्रमुख कर थे। कौटिल्य का यह सिद्धांत अत्यंत प्रसिद्ध है कि कर संग्रह मधुमक्खी द्वारा फूल से मधु संग्रह के समान होना चाहिए, जिससे न तो फूल को क्षति पहुँचे और न ही मधु का अभाव हो। यह अवधारणा आधुनिक प्रगतिशील कर प्रणाली (Progressive Taxation) से साम्य रखती है।

श्रम एवं वेतन नीति (Labor and Wage Policy)

कौटिल्य श्रम के महत्व से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने श्रमिकों के लिए निश्चित वेतन, कार्य के अनुसार मजदूरी तथा श्रम अनुशासन की व्यवस्था की। श्रम शोषण को दंडनीय अपराध माना गया है।

राज्य द्वारा श्रमिकों की सुरक्षा एवं रोजगार की व्यवस्था करना कौटिल्य की आर्थिक नीति का महत्वपूर्ण पक्ष है। यह नीति आधुनिक श्रम कानूनों एवं सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा का प्रारंभिक स्वरूप प्रतीत होती है।

राज्य नियंत्रण एवं बाजार व्यवस्था (State Control and Market System)

कौटिल्य राज्य को अर्थव्यवस्था का नियामक एवं संरक्षक मानते हैं। बाजार व्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण आवश्यक माना गया है ताकि आर्थिक असंतुलन, जमाखोरी एवं कालाबाजारी को रोका जा सके।

मूल्य निर्धारण, आपूर्ति नियंत्रण एवं दंड विधान के माध्यम से राज्य बाजार में संतुलन बनाए रखता था। यह व्यवस्था आधुनिक नियामक अर्थव्यवस्था (Regulatory Economy) के सिद्धांत से मेल खाती है।

आधुनिक आर्थिक सिद्धांतों से तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study with modern economic theories)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक संरचना का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनके आर्थिक विचार अनेक आधुनिक आर्थिक सिद्धांतों से साम्य रखते हैं। यद्यपि कौटिल्य का चिंतन प्राचीन काल में विकसित हुआ, तथापि उसमें निहित आर्थिक अवधारणाएँ आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राज्य–नियंत्रित किंतु जन–कल्याणोन्मुख अर्थव्यवस्था आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा से मेल खाती है। उन्होंने राज्य को केवल कर संग्रह करने वाली संस्था नहीं, बल्कि प्रजा के आर्थिक उत्थान का उत्तरदायी माना है। अकाल, प्राकृतिक आपदाओं एवं आर्थिक संकट के समय राज्य द्वारा सहायता प्रदान करने की व्यवस्था आधुनिक सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों का प्रारंभिक रूप कही जा सकती है।

इसी प्रकार, कौटिल्य की आर्थिक संरचना में निजी एवं राज्य दोनों क्षेत्रों की उपस्थिति दिखाई देती है, जो आधुनिक मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) की अवधारणा से साम्य रखती है। रणनीतिक उद्योगों पर राज्य का नियंत्रण तथा अन्य क्षेत्रों में निजी भागीदारी की अनुमति उनके संतुलित दृष्टिकोण को दर्शाती है।

कर प्रणाली के संदर्भ में कौटिल्य का सिद्धांत आधुनिक प्रगतिशील कर प्रणाली (Progressive Taxation) के अनुरूप है, जिसमें कर भार आय और क्षमता के अनुसार निर्धारित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, बाजार नियंत्रण एवं मूल्य नियमन की नीति आधुनिक नियामक अर्थव्यवस्था (Regulatory Economy) से जुड़ी हुई प्रतीत होती है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical Analysis)

कौटिल्य की आर्थिक संरचना अत्यंत संगठित, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक थी, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। उनका आर्थिक चिंतन मुख्यतः राज्य की शक्ति और स्थिरता को केंद्र में रखकर विकसित हुआ है, जिसमें नैतिक आदर्शों की अपेक्षा व्यावहारिकता को अधिक महत्व दिया गया है।

राज्य का अत्यधिक नियंत्रण, कठोर दंड व्यवस्था तथा गुप्तचरी प्रणाली को कुछ विद्वान निरंकुश प्रवृत्ति का संकेत मानते हैं। इसके अतिरिक्त, आर्थिक निर्णयों में जन–सहभागिता का अभाव भी एक सीमा के रूप में देखा जा सकता है।

फिर भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कौटिल्य की आर्थिक नीतियाँ अपने समय की सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप थीं। तत्कालीन राज्य की सुरक्षा, विस्तार और स्थिरता के लिए यह आर्थिक ढाँचा अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ। अतः कौटिल्य की आर्थिक संरचना को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल राजनीतिक या प्रशासनिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक आर्थिक ग्रंथ है। इसमें वर्णित आर्थिक संरचना कृषि, उद्योग, व्यापार, कर प्रणाली, श्रम नीति एवं राज्य नियंत्रण का एक संतुलित और व्यावहारिक समन्वय प्रस्तुत करती है।

कौटिल्य का यह विश्वास कि राज्य की समृद्धि प्रजा के कल्याण में निहित है, उनकी आर्थिक विचारधारा की मूल आधारशिला है। उनकी आर्थिक नीतियाँ राज्य–नियंत्रित होते हुए भी जन–कल्याणोन्मुख हैं, जो आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाती हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कौटिल्य की आर्थिक संरचना न केवल मौर्यकालीन भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी, बल्कि आधुनिक आर्थिक चिंतन के लिए भी प्रेरणास्रोत है। उनके आर्थिक विचार आज भी विकासशील देशों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

संदर्भ सूची (References)

1. कौटिल्य. अर्थशास्त्र (संस्कृत मूल). वाराणसीः चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. शर्मा, रामशरण. (1998). प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास. नई दिल्लीः ओरिएंट लॉन्गमैन।
3. मुखर्जी, राधाकुमुद. (2005). प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार. दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
4. पाण्डेय, उदय नारायण. (2010). कौटिल्य का अर्थशास्त्रः एक अध्ययन. वाराणसीः भारतीय विद्या प्रकाशन।
5. श्री वास्तव, के.सी(2014), प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।
6. झा, डी.एन. एवं श्रीमाली के.एम.,(1995). प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
7. प्रकाश ओम, (1986). प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, वाइली ईस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली।
8. महाजन वी.डी.,(2008). प्राचीन भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा.लि., नई दिल्ली।
9. रेड्डी, के.के.(2011). भारत का इतिहास, एम. ग्रो. हिल ऐज्यूकेशन प्रा.लि.,चेन्नई।
10. सिंह उपिन्द्र,(2018). प्राचीन व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पीयरसन पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. शर्मा आर.आर, (2023).भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. ज्ञंनजपसलंए(1992).जीम Arthashastra (R- Shamasastry] Trans-½- डलेवतमः ळवअमतदउमदज च्तमेप
13. ज्ञंनजपसलंए (2013). Arthashastra (L.N. Rangarajan] Trans.). छमू क्मसीपः च्मदहनपद ब्सेंपबे.
14. Mukherjee] R.K. (1959). Ancient Indian Political Thought- London% Oxford University Press.
15. Altekar, A. S. (1965). State and Government in Ancient India. Delhi% Motilal Banarsidass.
17. Basham,A. L. (1981). The Wonder That Was India.New Delhi% Rupa Publications.
18. Sharma, R. S. (1983). Material Culture and Social Formations in Ancient India- New Delhi% Macmillan.
19. Sharma, R. S. (2001). Early India% From the Origins to AD 1300- New Delhi% Oxford University Press.
20- Rangarajan, L. N. (1987). Kautilya% The Economist- Indian Economic Review] 22(1), 45–58-
21. Boesche, R. (2002). The First Great Political Realist% Kautilya and His Arthashastra- Journal of Asian Studies, 61¼1½] 9–37.
22. Singh, U.(2010). State, Economy and Society in the Arthashastra- Social Scientist, 38(3–4), 3–18.